Hindi Honours.

V.V.I

कार्नेलिया – " यहाँ के श्यामल कुंज, घने जंगल, सरि
की माला पहने हुई शैल-श्रेणी, हरी-भरी व
गर्मी की चाँदनी, शीतकाल की धूप और
भोले कृषक तथा सरला कृषक बालिका
बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों क
जीवित प्रतिमाएँ हैं। यह स्वप्नों का देश
यह त्याग और ज्ञान का पालना – यह प्रे
की रंगभूमि, भारत भूमि क्या भुलाई जा
सकती है? कदापि। नहीं – अन्य देश मनुष
की जन्मभूमि हैं, यह भारत मानवता की ज
भूमि है "।

राक्षस :- " शत्रु की उचित प्रशंसा करना मनुष्य का
धर्म है "।

सिकन्दर – " धन्य हैं – आप, मैं तलवार खींचे हुए
भारत में आया – हृदय देकर जाता हूँ। विस
विमुग्ध हूँ। जिनसे खड्ग परीक्षा हुई थी,
युद्ध में जिनसे तलवारें मिली थी, (उससे)
उनसे हाथ मिलाकर – मैत्री के हाथ मिला
जाना चाहता हूँ।"

चाणक्य – " समझदारी आने पर यौवन चला जात
है – जब तक माला गूँथी जाती है, तब तक
फूल कुम्हला जाते हैं। जिससे मिलने के सम
की इतनी धूमधाम, सजावट बनावट होती है, उसके
आने तक, मनुष्य अपने हृदय को सुन्दर और
उपयुक्त नहीं बनाये रह सकता "।

Hindi Honours.

चाणक्य – "उत्पीड़न की चिनगारी को अत्याचारी अपने ही अंचल में छिपाये रहता है"

चाणक्य – "ईश्वर सब मनुष्यों को स्वतंत्र उत्पन्न किया है, परन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता वहीं तक दी जा सकती है, जहाँ दूसरो की स्वतंत्रता में बाधा न पड़े। यही राष्ट्रीय नियमों का मूल है। वत्स चन्द्रगुप्त। स्वेच्छाचारी शासन का परिणाम तुमने स्वयं देख लिया है, अब मंत्री-परिषद् की सम्मति से मगध और आर्य्यावर्त के कल्याण में लगो।"

चाणक्य – "महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है"।

राक्षस – "मेरे देश में कृतज्ञता पुरुषत्व का चिह्न है"।

कार्नेलिया – "कृतज्ञता पाश है, मनुष्य की दुर्बलताओं के फन्दे उसे और भी दृढ़ करते हैं"।

कार्नेलिया – "महत्वाकांक्षा के दाँव पर मनुष्यता सदैव हारी है"।